M. T. B. COLLEGE, SURAT

Manuscripts Library

No. Rel.

Ser. 1314

Title: Gayatri Sahasra Nama

Setr

1314

Incomplete

Gāyatrī sahasra nāma

:	:		: Title
:	:		: Author
:	:		: Editor
:	:		: Year, Vols.
:	:		: Publisher
1314 :	:		: Remarks

त्वविन्ना। षण्णा॥ ४२॥ नवनस्थविदिग्धांगि॥ न
वचङ्कलाधरा॥ प्राकाररूपाप्राणेशी॥ प्रा।
ण संरक्षणीपरा॥ ४३॥ प्राणेश्वरीप्राणनारी
पुराणपुरवासिनी॥ ४४॥ प्राणसंजीवनीप्राण
प्राणप्राणविनोदिनी॥ प्रज्ञाप्राज्ञाप्रसन्नाप्रा।
म्या॥ प्रतीचीप्रजयाप्रिया॥ ४५॥ प्राची[illegible]ना
याप्रस्था॥ प्रज्ञातज्ञानरूपिणी॥ प्र[illegible]तीद[illegible]
संतुष्टा॥ प्राणायामप्र[illegible]दिनी॥ ४६॥ ४७

२३ समाराध्या ॥ प्रसीदप [illegible]
प्राप्त ॥ प्रवृत्तिप्रकृतिःपरा ॥ [illegible]
माप्राप्ता ॥ प्रज्ञीप्रारब्धा ॥ नाशनी ॥ प्रव [illegible]
निरता ॥ प्रसिद्धप्राणसाक्षिणी ॥ ४९ ॥ प्रमाण
ज्ञानसंपन्ना ॥ प्रजावृद्धिप्रभेदिनी ॥ प्रयाग
तीर्थनिलया ॥ प्रत्यक्षपरमेश्वरी ॥ ४८ ॥ प्रण
वाचिंत्रनिलया ॥ प्रणवादिप्रचोदयात् ॥
चोकाररूपा चोरघ्ना ॥ चोरबाधविनाशनि २३

॥१५०॥ चेतसा चेतनप्रीति ॥ चोरचौर्यचतुष्क
ति ॥ चक्रवर्ती चक्रधम्वा ॥ चक्रिणिचक्ररू
पिणी ॥ ५१ ॥ निरंजो निचिदानंदा ॥ चिद्रूपा
चिद्विलासिनी ॥ चिंताचिंतनप्रशमनी ॥ चिं
तितार्थफलप्रदा ॥ ५२ ॥ चांपेय्या चंपकप्री
ति ॥ चंडिचंडाट्टहासिनी ॥ चंडेश्वरी चंडमा
ता ॥ चंडमुंडविनासिनी ॥ ५३ [illegible] नोप [illegible]
चारुप्रीति ॥ चिक [illegible] दिनी ॥ ६३ ॥ दंड

२४ च्यरुपिणी चैना॥ चे

चित्रचित्रविचित्रांगी॥ चन

स० चलनाचलनस्थायि॥ चापिचफल ... तनी॥

॥५५॥ चंद्रमंडलमध्यस्था॥ चंद्रकोटिसुशीतलो

लेभा॥ चंद्रानुजसमासाध्या॥ चंद्रचंद्रसहोदरी

॥५६॥ चर्चिनारी चंद्रनागा॥ चंद्रकांतिचरेश्व

री॥ चराचरनिवासाच॥ चक्रपाणिसहोद

री॥५७॥ दकाररूपादंतघ्नी॥ दारिद्रछेदका २४

रिणी॥ दंतिनी दंतिनी दीना॥ दारिद्रादीना

वत्सला॥५८॥ दक्षाराध्या दक्षकन्या॥ दक्ष

यज्ञविघातिनी॥ दक्षादाक्षायनी दाक्षादी

क्षा दक्षवरप्रदा॥५९॥ दक्षिणा दक्षिणारा

ध्या॥ दक्षिणमूर्त्तिरूर्जिता॥ दयावतीद

मवती॥ दनुजारिर्दयानिधि॥६०॥ दंतसूर

निनादंता॥ दमदा दंतमस्तनी॥ दंतादम

थिता दंता॥ दंडीदंतप्रसादिनी॥६१॥ दंड

२५ धारी दंडकारी ॥ दंडदड्डविनाशिनी ॥ दंष्ट्राक
रालदुःप्रेक्षी ॥ दंतशोभनदयावती ॥ ६२ ॥ दंडा
नुषादयासारा ॥ धर्मिष्ठाधामभूषणा ॥ ६३ ॥
दरिद्रारिद्रशमनी ॥ दमादमनभूषणा ॥ न
वाचितपादश्री ॥ दविली द्रुविलीधरा ॥ ६४
दामोदरिदानवारि ॥ दामोदरसहोदरी ॥ दा
तादनप्रसाहाया ॥ दानश्रीदीनमंडपा ॥ ६५ ॥
दंपतीदंपतीप्रीताऽधिमग्नदयादमा ॥ दा २५

डीमीबीजवक्त्रा ॥ दंतपंक्तिविराजिता
॥ ६६ ॥ दर्पणाद्रौपतीदीप्ता ॥ ध्रुवमंडलवा
सिनी ॥ दशावतारजननी ॥ दशादिक्पाति
पूजिता ॥ ६७ ॥ दशादशाधिशीनस्य ॥ दासा
दासि दयानिधि ॥ देशकालपरिज्ञाना ॥ दे
शकालदयानिधि ॥ ६८ ॥ देशकालप्रदा
हाद्या ॥ दशपापविमोचिनी ॥ दशम्यादि
समाराध्या ॥ दशग्रीवमदापहा ॥ ६९ ॥

२६ दशापराधशमनी। दशावर्तिफलप्रदा
याकाररूपिणीयज्ञा। यादवीयादवार्चि
स० ता॥ ७० ॥ ययातिपूजनप्रीता। यायज्ञाया
चकप्रिया। यादेवीयानतोयाता। यामपू
जफलप्रदा॥ ७१॥ यशस्विनीसमाराध्या
यमकन्यायतीश्वरि। यमादियोगसंतु
ष्टा॥ योगींद्रहृदिसंस्थिता॥ ७२॥ यपोपाधि
विनिर्मुक्ता॥ येयेशास्त्रविधिकृता॥ यात २६

नादेहशमनी॥ पत्रयायाविवर्द्धिता॥ ७३
॥ इतिनामावलिः॥ इतितेकथितंदेवी
रहस्यंसर्वकामदं॥ सर्वपापप्रशमनं। स
र्वतीर्थफलप्रदं॥ ७४॥ चतुःसमुद्रपर्यंत
भूदानेफलदंशिवे॥ सहस्रकोटिफल
दं॥ गंगास्नानंनिसेवितं॥ ७५॥ कोट्यश्वमे
धेफलदं॥ जरामृत्युनिवारणं॥ कन्याको
टिप्रदानेन॥ यत्फलंलभतेनरः॥ ७६॥

२७ तत्फलं लभते सम्यक् ॥ नाम्नां दशशतं
जपेत् ॥ यः शृणोति महाविद्यां ॥ श्रावयेद्वा
पि समुक्तितः ॥ ७७ ॥ सोपि मुक्तिमवाप्नोति
यत्र गाथिर्यान चोदति ॥ यत्र राक्षसवे
ताला ॥ ग्रह कूष्माण्ड भैरवः ॥ ७८ ॥ पठना
त्तस्य नश्यन्ति ॥ जीवेच्च शरदं शतं ॥ ब्रह्म
हत्यादि पापेभ्यो ॥ मुच्यते श्रावयेन्नरः ॥
॥ ७९ ॥ किं पुनः पठनात्तस्य ॥ मुक्तिं दंचान २७

पाठिना ॥ इदं रहस्यं परमं ॥ परं स्वस्त्यय
नं महत् ॥ ८० ॥ यस्य कृत्वा पठेत्स्तोत्रं ॥ श्र
द्धया समाहितः ॥ पठते च ततः कामान्
परं ब्रह्मा पदं लभेत् ॥ ८१ ॥ सर्वयज्ञं फलं
देवी ॥ लभते व न संशयः ॥ सशत्रून् ज
यते सद्य ॥ मातंगादि वकेशरी ॥ ८२ ॥ तस्य
पापक्षयं यांति ॥ मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥
॥ ८३ ॥ इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे रुद्रयामले ॥

२९ उमामहेश्वरसंवादे ॥ गायत्र्यादिव्यसह
२० स्रनामामृतस्तोत्रंसपूर्णं ॥ श्रीभवानी
स० शंकरार्पणमस्तु ॥ ॥ शुभंभवतु ॥
॥ कल्या ॥ ॥ ण ॥ ॥ मस्तु ॥